Gupta period (part -3)

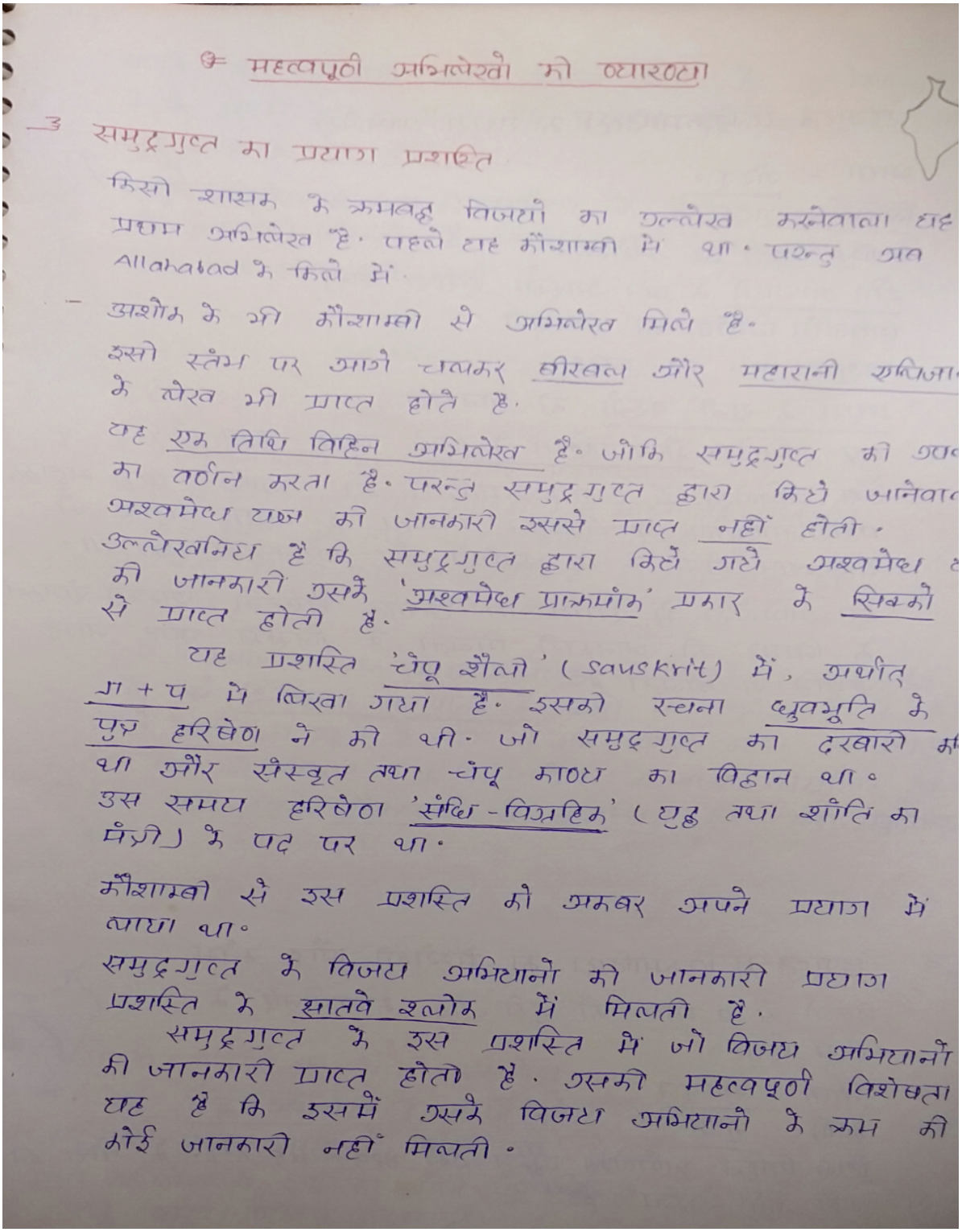

महत्वपूर्ण अभिलेखों की व्याख्या

3 समुद्रगुप्त का प्रयाग प्रशस्ति

किसी शासक के क्रमबद्ध विजयों का उल्लेख करनेवाला यह प्रथम अभिलेख है. पहले यह कौशाम्बी में था. परन्तु अब Allahabad के किले में.

- अशोक के भी कौशाम्बी से अभिलेख मिले है.

इसी स्तंभ पर आगे चलकर बीरबल और महारानी कविजा के लेख भी प्राप्त होते है.

यह एक तिथि विहिन अभिलेख है. जोकि समुद्रगुप्त की उप का वर्णन करता है. परन्तु समुद्रगुप्त द्वारा किये जानेवा अश्वमेध यज्ञ की जानकारी इससे प्राप्त नहीं होती. उल्लेखनीय है कि समुद्रगुप्त द्वारा किये गये अश्वमेध की जानकारी उसके 'अश्वमेध प्राक्रमांक' प्रकार के सिक्कों से प्राप्त होती है.

यह प्रशस्ति 'चंपू शैली' (Sanskrit) में, अर्थात् ग + प मे लिखा गया है. इसकी रचना ध्रुवभूति के पुत्र हरिषेण ने की थी. जो समुद्रगुप्त का दरबारी क था और संस्कृत तथा चंपू काव्य का विद्वान था. उस समय हरिषेण 'संधि-विग्रहिक' (युद्ध तथा शांति का मंत्री) के पद पर था.

कौशाम्बी से इस प्रशस्ति को अकबर अपने प्रयाग में लाया था.

समुद्रगुप्त के विजय अभियानों की जानकारी प्रयाग प्रशस्ति के सातवे श्लोक में मिलती है.

समुद्रगुप्त के इस प्रशस्ति में जो विजय अभियानों की जानकारी प्राप्त होती है. उसकी महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसमें उसके विजय अभियानों के क्रम की कोई जानकारी नहीं मिलती.

3 चंद्रगुप्त-II विक्रमादित्य का मथुरा अभिलेख

भाषा - संस्कृत
लिपि - गुप्त

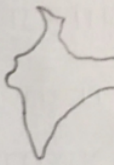

धार्मिक महत्व का अभिलेख
शैव आचार्यों के प्रति आस्था सुरक्षा बिन्दु.
शिवलींग निर्माण की जानकारी
पाशुपत मत पर प्रकाश
मथुरा के सूती वस्त्रों की जानकारी.
यह अभिलेख भैरव प्रतिमा के निचे लिखा हुआ है.
इस अभिलेख में C.II विक्रमादित्य की उपाधि 'परम भ
महाराजाधिराज श्री चंद्रगुप्त' मिलता है. परम भट्टारक
यह ज्ञात होता है कि सामंती दौर प्रारंभ हो चुका था
इस अभिलेख में 'समय धर्म' अर्थात श्रेणियों, शिल्पी सं
के नियम की जानकारी मिलती है. जिसकी पुष्टि नार
स्मृति में मिलती है.

Cont.....